वीणा 1

कक्षा 3 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

0331

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

0331 – वीणा 1
कक्षा 3 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-949-8

प्रथम संस्करण
अप्रैल 2024 चैत्र 1946
पुनर्मुद्रण
फरवरी 2025 माघ 1946

PD 500T BS

© ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024***

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग , नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा चंदू प्रेस, 469, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली-110092 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरू 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*जहान लाल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*सायुराज ए.आर.*

आवरण एवं चित्रांकन
ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का बुनियादी स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए, उन्हें न केवल हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्भूत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने का अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता अर्जित करने का भी अवलंबन देता है ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण आरंभिक स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

आरंभिक स्तर, जो बुनियादी और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का काम करता है, विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है, जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। यह कहना अनावश्यक होगा कि इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, आवश्यक रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ सतत रहेंगी लेकिन इसी बीच इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों के द्वारा आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषाओं, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 3 के लिए वर्तमान पाठ्यपुस्तक *वीणा 1* इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विकसित की गई है। इस प्रकार *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का अक्षरशः अनुपालन करते हुए, यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है, जो इस स्तर की शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित एकीकरण और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इन सबके साथ-साथ भरपूर रोचक विचारों और गतिविधियों से पूर्ण यह पुस्तक निश्चित रूप से बच्चों के लिए केवल रोचक ही नहीं होगी, अपितु वे इसे ध्यानपूर्वक पढ़ने में भी रुचि रखेंगे; इसमें सम्मिलित सभी विचारों को समझेंगे और इसमें सुझाई गई गतिविधियों को अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ मिलकर करेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक

© NCERT not to be republished

होता है बल्कि यह बहुत महत्वपूर्ण भी है क्योंकि इससे संबंधित अन्य गतिविधियों का पता चलता है, जो सीखने की प्रक्रिया को आनंदमय और लाभप्रद बनाती हैं। इसलिए, इस पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों से सीखकर, विद्यार्थी और शिक्षक दोनों, इस स्तर पर अपना अनुभव समृद्ध करने के लिए और भी बहुत सारी आनंददायक गतिविधियों को कर पाएँगे।

इसके साथ ही, यहाँ यह महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पाठ्यपुस्तक का शिक्षणशास्त्रीय पक्ष समझ, मौलिकता, तर्कशक्ति और निर्णय लेने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस स्तर पर बच्चे स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं और उनके पास बहुत सारे प्रश्न होते हैं। इसलिए सीखने के मूल सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियों की रूपरेखा बनाते समय उनकी उत्सुकता को संबोधित करने के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए। यद्यपि बुनियादी स्तर से खेल द्वारा सीखने की विधियाँ निरंतर रहेंगी, तथापि इस स्तर में शिक्षा और सीखने में सम्मिलित खिलौनों और खेलों की प्रकृति बदलेगी, अब यह खेल केवल आकर्षक होने के बजाय बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से अधिक जोड़ सकेंगे।

इसी तरह, इस पुस्तक से सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है, साथ ही यह अपेक्षा है कि बच्चे इस विषय पर बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी पढ़ेंगे और सीखेंगे। स्कूलों में पुस्तकालयों को इस संबंध में प्रावधान करने की आवश्यकता है। साथ ही, इस प्रकार से माता-पिता और शिक्षक उन्हें और अधिक सीखने में सहायता करेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सीखने के लिए प्रभावी वातावरण यह सुनिश्चित कर सकता है कि बच्चे ध्यान, उत्साह और जुड़ाव के साथ सीखने के लिए प्रेरित रहें और जिज्ञासा तथा सृजनशीलता के विकास हेतु प्रोत्साहित रहें।

इस विश्वास के साथ, मैं यह पुस्तक आरंभिक स्तर के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

नई दिल्ली

31 मार्च 2024

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

पाठ्यपुस्तक के विषय में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि कक्षा 3 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *वीणा 1* आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा)* का महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे बच्चे अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बच्चों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों का विकास, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अतः यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना नहीं है, बल्कि बच्चों की जीवन-शैली सहित उनमें व्यवहारगत परिवर्तन का परिलक्षित होना भी है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्यों का सापेक्ष संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। बच्चे भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें अपितु इसके सौंदर्यशास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्न विचारों को ध्यान में रखा गया है—

1. पुस्तक को पाँच इकाइयों में व्यवस्थित किया गया है। पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, एकांकी, पहेली आदि से बच्चों का रुचिपूर्ण विधि से परिचय कराया गया है। अभ्यासों को इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे बच्चों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।
2. पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
3. यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के चारों ओर अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से बच्चों में समावेशी दृष्टि लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

4. विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे– समझ के साथ बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

आरंभिक स्तर (प्रिपरेटरी स्टेज) के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा)* में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

पाठ्यचर्या लक्ष्य-1: विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-2: परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे–गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-3: अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-4: विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-5: पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति एक प्रमुख उद्देश्य है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफल तय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री का संयोजन

यह पाठ्यपुस्तक पाँच इकाइयों में विभक्त है। पहली इकाई का शीर्षक 'हमारा पर्यावरण' है। इसमें शामिल 'सीखो' और 'बया हमारी चिड़िया रानी!' कविताएँ और 'आम का पेड़' कहानी प्रकृति की छटाओं को निहारने और अपने जीवन में उसे अंगीकार करने की भावना प्रस्तुत करती हैं। 'कितने पैर?' पाठ जीव-जगत का रुचिपूर्ण संसार प्रस्तुत कर रहा है। दूसरी इकाई का नाम 'हमारे मित्र' है। यह इकाई व्यक्ति और परिवेश से मित्रता जैसे संबंध के आस-पास बुनी गई है। इस भाव को प्रस्तुत करने के लिए इसमें क्रमशः 'बीरबल की खिचड़ी', 'मित्र को पत्र', 'चतुर गीदड़' और 'प्रकृति पर्व— फूलदेई' जैसे पाठ सम्मिलित किए गए हैं। तीसरी इकाई, 'आओ खेलें' नाम से पुस्तक में संकलित है। खेल और बचपन का आनंद विद्यार्थियों के जीवन का अनिवार्य भाग होता है। इसे ध्यान में रखते हुए इस इकाई में 'सुनो भई गप्प', 'रस्साकशी', 'ट्रैफिक जाम' और 'एक जादुई पिटारा' जैसी आनंदमयी कविताएँ सम्मिलित की गई हैं। इकाई चार का शीर्षक 'अपना-अपना काम' है। इसमें श्रम का महत्व और उसकी विविधता दिखाई गई है। श्रम के मूल्य को बच्चों हेतु ग्राह्य बनाने के लिए 'अपना-अपना काम' और

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished

'किसान की होशियारी' जैसी कहानियाँ तथा 'पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'' जैसा प्रेरक निबंध लिया गया है। इकाई पाँच का नाम 'हमारा देश' है। इसमें भारत देश की विविधता, उसका गौरव, कथा-परंपरा, खान-पान संस्कृति और विविधता में भी एकता के तत्वों को प्रस्तुत किया गया है। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में प्राचीन परंपरा से चंद्रयान तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मौखिक भाषा का विकास और लेखन

पाठ्यपुस्तक में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से इकाइयाँ और उनके अभ्यास निर्मित किए गए हैं। हर पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिसमें हर बच्चा भाग ले सकता है और अपना अनुभव साझा कर सकता है। उदाहरण के लिए 'सीखो' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है, "उगते हुए सूरज को देखकर आपके मन में किस प्रकार के भाव आते हैं?" यह प्रश्न हर बच्चे के लिए है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में दिए गए शीर्षकों 'सुनें कहानी', 'मिलकर पढ़िए', 'आनंदमयी कविता' और 'पढ़ने के लिए' के अंतर्गत पढ़ने की विविधतापूर्ण सामग्री का संयोजन किया गया है। मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम, बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है।

पाठों के अभ्यास में बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। बच्चे सरलता और आनंद के साथ इन अभ्यासों को करें। उदाहरण के लिए 'रस्साकशी' कविता में यह प्रश्न दिया गया है, "आपका सबसे प्रिय खेल कौन-सा है? उसके बारे में चार पंक्तियाँ लिखिए।" बोलने से लिखित भाषा की ओर बच्चों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पना विशेष स्थान रखती है। बच्चे इस उम्र में पर्याप्त कल्पनाशील होते हैं। वे अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ न कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिससे विद्यार्थी कल्पना के संसार में प्रविष्ट हों। ऐसे प्रश्न बच्चों पर सही अथवा गलत उत्तर का दबाव नहीं डालते। उदाहरण के लिए 'चंद्रयान' पाठ में प्रश्न दिया गया है, "यदि चंद्रयान-3 से जुड़े वैज्ञानिक आपके विद्यालय में आएँ तो आप उनसे कौन-से प्रश्न पूछना चाहेंगे?"

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्ति में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए घर और आस-पड़ोस से जुड़ी गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए 'आम का पेड़' कहानी में घर के बड़ों से आम के विभिन्न प्रकार के नाम पूछने के लिए कहा गया है।

रचनात्मकता मन की बात करने, रचने और लिखने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में रचना और बच्चे के बीच के संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु कुछ ऐसी गतिविधियाँ दी

Reprint 2025-26

गई हैं जो रोचक हैं। उदाहरण के लिए 'चतुर गीदड़' एकांकी के अभ्यास प्रश्न में कागज से गीदड़ का मुखौटा बनाने की गतिविधि दी गई है। इस तरह की गतिविधियाँ लगभग सभी इकाइयों में दी गई हैं।

परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि बच्चे इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली गतिविधियाँ दी गई हैं। महिलाओं और पुरुषों की सार्थक और संतुलित भागीदारी से स्वस्थ समाज और राष्ट्र निर्मित होता है। अतः पाठ्यपुस्तक में लैंगिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। साथ ही भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ उपयुक्त शिक्षणशास्त्रीय दृष्टि से समेकन भी किया गया है।

बहुभाषिकता और कक्षा शिक्षण

बहुभाषिकता भारत की संस्कृति का अनिवार्य अंग है। शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है। दैनिक जीवन में बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है, विशेष रूप से उस आयु में जब बच्चे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने का प्रयत्न कर रहे होते हैं। पुस्तक में ऐसी गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिसमें बच्चे हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ेंगे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है, कक्षा शिक्षण के समय शिक्षक द्वारा बहुभाषिक शिक्षण पद्धति का उपयोग करना। शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठों को पढ़ाते हुए बच्चों को अपनी भाषा, परिवेश और संस्कृति से जोड़ते हुए शिक्षण कार्य करें।

पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार है, एकमात्र साधन नहीं। एक रचनात्मक एवं प्रतिबद्ध शिक्षक को निरंतर नवीन पाठ्यसामग्री की सहायता लेनी पड़ती है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों का स्तर देखते हुए स्वयं ही तय करना पड़ता है कि उन्हें किस प्रकार की पाठ्यसामग्री और गतिविधियाँ उपलब्ध कराई जाएँ। उद्देश्य तो अंततः अपेक्षित भाषायी कौशलों एवं दक्षताओं का विकास ही है।

हमें विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का निर्धारित उद्देश्यों और निर्देशों के अनुसार रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

नीलकंठ कुमार
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
भाषा शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी **(सह-अध्यक्ष)**

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विज़िटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी. गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.

चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर,* योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

मार्गदर्शन

महेश चंद्र पंत, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.) तथा *सदस्य*, समन्वयन समिति, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह— आरंभिक स्तर, रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली

मञ्जुल भार्गव, *उपाध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति तथा *सदस्य*, समन्वयन समिति, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह— आरंभिक स्तर, रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली

सुनीति सनवाल, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली तथा *सदस्य संयोजक*, समन्वयन समिति, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह— आरंभिक स्तर, रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली

अध्यक्ष, उप-समूह (हिंदी)

चमन लाल गुप्त, *प्रोफेसर* एवं पूर्व *अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश

सहयोग

कविता बिष्ट, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प. परिसर, नई दिल्ली

ज्योति, *वरिष्ठ शोध सहायक,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

टीना कुमारी, *सहायक प्रोफेसर*, गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

निशा जैन, *प्रवक्ता* (हिंदी), राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शकरपुर, दिल्ली

नीरा नारंग, *प्रोफेसर*, केंद्रीय शैक्षिक संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

पूजा, *जे.पी.एफ.*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रणय कुमार, *वरिष्ठ अध्यापक* एवं *निवर्तमान अध्यक्ष* (हिंदी एवं संस्कृत), एल.के. सिंहानिया एजुकेशन सेंटर, गोटन, नागौर, राजस्थान

विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* (हिंदी), आरोही आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग, कैथल, हरियाणा

शशि कुमार शर्मा, *प्रवक्ता* (हिंदी), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, मझियाठ, मंडी, हिमाचल प्रदेश

© NCERT not to be republished

शारदा कुमारी, *प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम, नई दिल्ली

श्याम सिंह सुशील, बाल साहित्यकार एवं पूर्व *वरिष्ठ उप-संपादक*, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली

समीर, *सहायक प्रोफेसर*, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा, पंजाब

सय्यद मतीन अहमद, *प्रोफेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, तेलंगाना

साकेत बहुगुणा, *परामर्शदाता*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति, रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली

सुधा मिश्रा, *परामर्शदाता* एवं *साक्षरता विशेषज्ञ*, पी.एम.यू, राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, मध्य प्रदेश

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार

समीक्षक

गोविंद प्रसाद शर्मा, *प्रोफेसर* एवं *भूतपूर्व अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली

मीरा भार्गव, *प्रोफेसर एमेरिटस, हॉफ्स्ट्रा* विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य-समन्वयक, उप-समूह (हिंदी)

नीलकंठ कुमार, *सहायक प्रोफेसर* (हिंदी), भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह — आरंभिक स्तर के सभी सदस्यों तथा अन्य अंत:संबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। परिषद्, रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए प्रकाश मनु (चींटी); मञ्जुल भार्गव (कितने पैर?, एक जादुई पिटारा); मालती देवी (सुनो भई गप्प); चंदन यादव, भोपाल व *प्रकाशक*, इकतारा प्रकाशन, भोपाल (*प्लूटो* पत्रिका से 'दोस्त के जूते', वर्ष 3, अंक 5); महादेवी वर्मा एवं प्रमोद कुमार गुप्त, झाँसी (बया); साकेत बहुगुणा, दिल्ली, (मित्र को पत्र); सुनीति सनवाल, दिल्ली, (प्रकृति पर्व — फूलदेई); कन्हैया लाल 'मत्त', गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश व *प्रकाशक*, विद्यार्थी प्रकाशन, दिल्ली (*मेरी बाल कविताएँ* पुस्तक से 'रस्साकशी'); मनोज कुमार झा, पटना व *प्रकाशक*, इकतारा प्रकाशन, भोपाल (ट्रैफिक जाम); राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली व *प्रकाशक*, दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, दिल्ली, [*उड़ान, भाग 2* (2004) से 'अपना-अपना काम', 'किसान की होशियारी']; निशा जैन, दिल्ली, (पेड़ों की अम्मा 'थिमक्का'); भगवान सिंह व *प्रकाशक*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, (*पंचतंत्र की कहानियाँ* पुस्तक से 'बोलने वाली माँद'); सोहन लाल द्विवेदी एवं आकांक्षा द्विवेदी (भारत); पद्मश्री विनय चंद्र मौदगल्य व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, बिहार (हिंद देश के निवासी); इरफ़ान, *कार्टूनिस्ट* व *प्रकाशक*, इकतारा प्रकाशन, भोपाल (*प्लूटो* पत्रिका से 'चुटकुला सचित्र', अंक 5, वर्ष 3); चित्रा गर्ग, दिल्ली (पहेलियाँ); हरीश वार्ष्णेय व *प्रकाशक*, सुरेन्द्र कुमार एंड संस, दिल्ली (*रोचक पहेलियाँ* पुस्तक) के प्रति आभारी है।

इस पुस्तक में अंत:संबंधी विषयों जैसे समावेशन, लैंगिक संवेदनशीलता, कला-शिक्षा इत्यादि की सूक्ष्म रूप से समीक्षा के लिए परिषद् इंद्राणी भादुड़ी, विनय सिंह, मोना यादव, मिली रॉय एवं ज्योत्स्ना तिवारी, *प्रोफ़ेसर*, रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली के प्रति आभार प्रकट करती है।

परिषद्, तकनीकी सहयोग हेतु पूजा साहा, *अर्द्ध पेशेवर सहायक* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, अकादमिक सहयोग हेतु अंजना, *अनुवादक*, हिंदी प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली तथा कार्यालयी सहयोग के लिए सुशीला जरोदिया एवं चंचल, *टाइपिस्ट* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग के प्रति आभार व्यक्त करती है।

© NCERT
not to be republished

Reprint 2025-26

परिषद्, विशेष रूप से ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि., नई दिल्ली का आभार प्रकट करती है, जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक इस रूप में आ सकी है।

परिषद्, इस पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग और अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); अतुल गुप्ता, *सहायक संपादक* (संविदा); शिव मोहन यादव, *सहायक संपादक* (संविदा); पवन कुमार बरियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ, विपन कुमार शर्मा एवं उपासना, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

कहाँ क्या है?

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तक के बारे में *v*

इकाई एक – हमारा पर्यावरण

1.	सीखो	1
2.	चींटी	9
	चींटी और हाथी की छुपन-छुपाई*	13
3.	कितने पैर?	14
	दोस्त के जूते*	24
4.	बया हमारी चिड़िया रानी!	25
5.	आम का पेड़	33

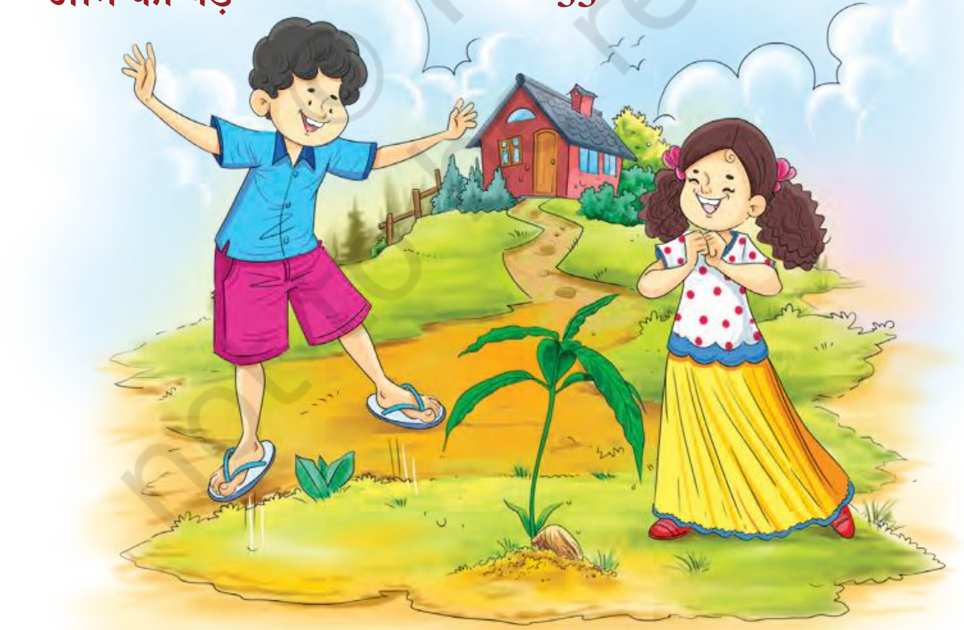

* *तारांकित पाठ केवल पढ़ने के लिए हैं।*

Reprint 2025-26

इकाई दो – हमारे मित्र

6. बीरबल की खिचड़ी 46

7. मित्र को पत्र 56

8. चतुर गीदड़ 63

9. प्रकृति पर्व — फूलदेई 73

इकाई तीन – आओ खेलें

सुनो भई गप्प* 80

10. रस्साकशी 82

ट्रैफिक जाम* 91

11. एक जादुई पिटारा 92

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

इकाई चार – अपना-अपना काम

12.	अपना-अपना काम	100
13.	पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'	108
14.	किसान की होशियारी	114

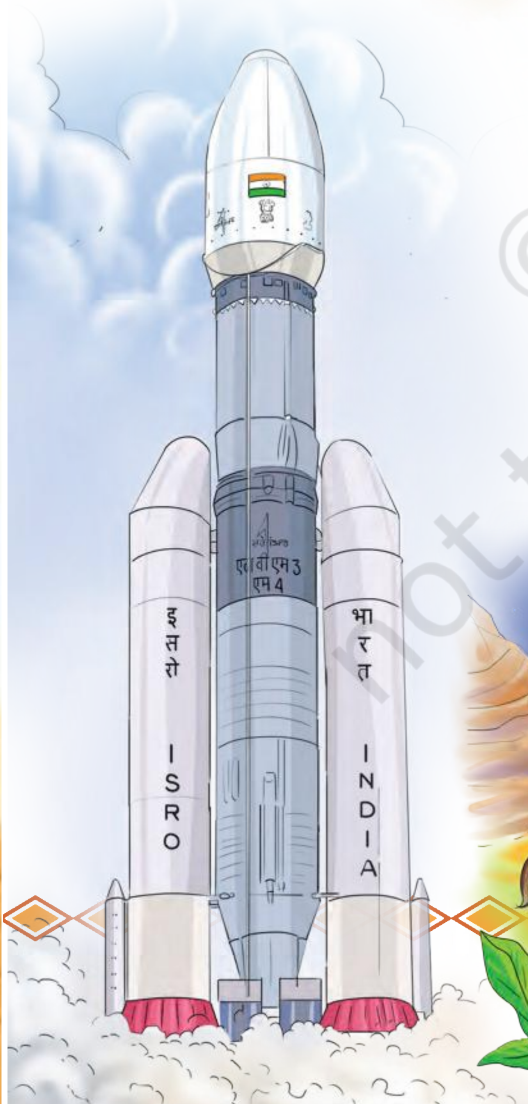

इकाई पाँच – हमारा देश

15.	भारत	122
16.	चंद्रयान (संवाद)	129
17.	बोलने वाली माँद	138
18.	हम अनेक किंतु एक	147
	हिंद देश के निवासी*	154

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished